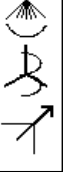


Sri – Om
VEDIC MATHEMATICS AWARENESS YEAR

E-Newsletter Issue no 143 dated 26-03-2015

For previous issues and further more information visit at www.vedicganita.org

		<p>ॐ । गायत्री छन्द । सरसवती मंत्र । महेश्वर सूत्र । गणित सूत्र</p> <p>Om Gyatri Chand, Saraswati Mantra, Maheshwar Sutra, Ganita Sutras</p>
---	---	--

<p>वैदिक गणित (सूर्य रश्मियो का गणित)</p>	<p>Vedic Mathematics (Sunlight format Mathematics)</p>
<p>I. देवनागरी वर्णमाला II. जड़ भरत III. वर्णों की उत्पत्ति IV. पंचीकरण V. ज्योति व्यूह अंक VI. आ ब्रह्म भुवन लोक VII बीज अक्षर</p> <p style="text-align: center;">VIII श्री ॐ</p> <p>वेद विध्या का प्रारम्भ 'श्री ॐ' से किया जाता है। 'श्री' व ' ॐ' के अर्थों का बहुत विस्तार है। 'श्री' शब्द के वाचको की श्रंखला बहुत लम्बी है।</p> <p>इसी तरह 'श्री' के वाचक अनेक है। 'तस्यवाचक प्रणव' योग अनुशासन का सुप्रसिद्ध मंत्र है।</p> <p>'श्री, प्रणव, ओम, ओमकार', ओम के वाचक विध्यास्थान है।</p> <p>इससे आगे उदगीत विध्या, वष्टकार प्रबन्ध वेद विध्याओ के मार्ग है।</p> <p>इस तरह से ये मार्ग विस्तार पाते जाते</p>	<p>I. Devnagri alphabet II. Jad Bharat III. Creation of letters IV. 5 x 5 format V. Transcendental code value VI. Along organization format of elongated first vowel VII Seeds syllables</p> <p style="text-align: center;">VIII Sri Om</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. Initiation for Vedic knowledge may be had with the help of 'Sri Om' 2. The formulation 'Sri Om' deserve to be chased quarter by quarter in the sequential arrangement of ranges of their synonyms. 3. The acquaintance with script of Devnagri alphabet is going to be of big help for this chase. 4. Here it may be relevant to note that the script forms of individual alphabet letters and their

है।

ज्योति व्यूह तेजअंको के अनुसार 'श्री' का मूल्य ७ अंक वाला है तथा 'ॐ' का मूल्य १६ अंको वाला है।

'श्री' शब्द तीन वर्णों के संयोग से बना है। वा इस तरह से $7 = 2 + 1 + 4$ सरंचना बनती है।

यहां पर ये जानने योग्य है कि $28 = (1+2+4) + (1+2+4) + [(1+2+4) + (1+2+4)]$ अपने आप में २८ अंक के भाज्य 1, 2, 4, 7, 14 का गणित उद्गरित करता है।

ये २८ संख्या ब्रह्म की ज्योति व्यूह तेजअंक मूल्यो वाली है।

इस तरह से ब्रह्म पांच पादो वाला ठहरता है। ये सब जानने, समझने की आवश्यकता है।

ये २८ अंक की पूर्णतया बताता है।

'ॐ' के चार पाद है।

१. बिन्दु सरोवर '●'
२. अर्ध मात्रा '∪'
३. त्रिपुण्डम् '३'
४. स्वास्तिक पाद् '∩'

'ॐ' से वाचक 'प्रणव' हमें 'प्रणव' के चार पादो के 'ॐ' के चार पादो के सम, साम्य व समान्तर समुच्चयो के रूप में आरोही क्रम को अवरोही क्रम से उर्ध्व गति प्राप्त करनी होती है।

इस तरह से 'ॐ' के चौथे पाद 'स्वास्तिक पाद' से आगे 'प्रणव' के प्रथम पाद 'प्र' की ओर अग्रसर होना होता है।

placements along the organization format of Devnagri alphabet are the pre-requisite for such chase.

5. The script form of individual letters, as well as the organization of alphabet here is of geometric formats.
6. The script forms of individual letters, infact are the printouts of higher dimensional formats bodies as curves along 2-space surface.
7. As such it would be advisable that one shall first acquire these values before chase as has been indicated in the 'Hindi language' narration in the adjoining column.

*

<p>इस तरह से पाद पाद के क्रम से उर्ध्व गति प्राप्त की जाती है।</p> <p>आगे ये उर्ध्व गति 'ओम्' के पादक्रम से अतिवाहको पर आरूढ़ होते है।</p> <p>'अतिवाहक' 'ॐ' के क्रम से 'सूर्य मण्डल' की प्राप्ति कर लेते है।</p> <p>इससे आगे 'ओमकार' सत्ता से सूर्यमण्डल की सत्ता की समानता प्राप्त होती है। ये समानता प्राप्त होने पर उर्ध्व गति 'उदगीत' आधार वाली हो जाती है।</p> <p>'उदगीत' आधार वाली उर्ध्व गति 'वष्ट्कार' प्राप्ति वाली होती है।</p> <p>'वष्ट्कार' प्राप्ति सप्त भूमि वाली होती है।</p> <p>सप्त भूमि प्राप्ति वाली उर्ध्व गति अष्टप्राप्ति प्रकृति मूल्यो वाली होती है।</p> <p>अष्टप्राप्ति प्रकृति के मूल्ये उर्ध्वतिर्यकभ्याम् सूत्र अनुसार नवब्रह्म् की प्राप्ति करवाती है। इस तरह साध कनव ब्रह्म् व प्रब्रह्म् दोनो स्थितियो को अपनी साधना के अनुसार प्राप्त कर लेते है।</p> <p style="text-align: right;">*</p>	
...क्रमश	...to be continued
<p>२६-०३-२०१५</p> <p style="text-align: right;">डा. सन्त कुमार कपूर</p>	<p>26-03-2015</p> <p style="text-align: right;">Dr. Sant Kumar Kapoor</p>